nt>

Title: Need to check the move to handover rare quality genes of paddy to a multi-national company by Indira Gandhi Agriculture University Raipur, Chattisgarh − Laid.

डॉ0 चरणदास महंत (जांजगीर) : उपाध्यक्ष महोदय, इंदिरा गांधी कृाि विश्वविद्यालय द्वारा एक बहुराट्रीय कम्पनी सिंजेंटा की छत्तीसगढ़ की हजारों धान की दुर्लभ किस्में सौंपने का विरोध बढ़ता जा रहा है। कृाि विश्वविद्यालय में छत्तीसगढ़ की धान की किस्मों के 24 हजार प्रजातियों का अनूठा संग्रह है। धान की इन हजारों किस्मों को एक बहुराट्रीय कम्पनी सिंजेंटा को सौंपने का एक गुपचुप समझौता किया जा रहा है। कृाि विश्वविद्यालय और सिंजेंटा के बीच इस संबंध में तीन बैठकें हो चुकी हैं। दोनों पक्षों के एम0ओ0यू0 (आपसी समझौते) पर विस्तृत बातचीत हुई। पर इस संबंध में न तो सरकार और न ही संबंधित विभाग और अधिकारियों को कोई जानकारी दी गई। रिर्सच फाउंडेशन फॉर साइंस टैक्नोलोजी एंड इकोलॉजी के डॉ0 आर0एच0 रिछारिया ने पहले कटक राइस रिर्सच इंस्टीटयूट में और बाद में रायपुर रि्सच इंस्टीटयूट (जो अब इंदिरा गांधी कृाि विश्वविद्यालय) में हजारों धान के देसी बीजों का संग्रह किया। कटक में धान के जर्म प्लाज्म को एक विदेशी संस्थान को सौंपने और उच्च उत्पादक किस्म भारत में लाने का डॉ0 रिछारिया ने विरोध किया था। अब फिर एक बार धान के जर्म प्लाज्म को सौंपने की कोशिश सिंजेंटा के साथ समझौता कर की जा रही है। सिंजेंटा पहले ही ‘‘‘‘गोल्डन राईस"" का पेटेंट ले चुकी है। यह एक जैव चोरी और जीन राबरी है।

मेरी भारत सरकार से मांग है कि इसे तत्काल रोका जाये।